42.0 झारखण्ड के पोड़ाहाट की भौगोलिक दशा एवं दिशा: एक ऐतिहासिक अध्ययन

- **पूनम कुमारी,** शोधार्थी, रांची विश्वविद्यालय
  Email: poonamk459@gmail.com
- **डॉ मनोज शेखर.,** एसोसिएट प्रोफेसर, योगदा सत्संग महाविद्यालय, रांची विश्वविद्यालय

शोध-सार

झारखंड के पोड़ाहाट राज(सिंहभूम) की भौगोलिक दशा एवं दिशा एक विशेष महत्व रखता है, जो चक्रधरपुर के सिंहवंश राज का एक अभिन्न अंग है। पोड़ाहाट राज की भौगोलिक स्थिति छोटा-नागपुर पठार पर है, जो झारखंड और ओडिशा के खनिज संसाधनों से भरपूर क्षेत्र में स्थित है। पोड़ाहाट राज की भौगोलिक दशा में पहाड़, जंगल, और नदियाँ शामिल हैं। संजय नदी इस क्षेत्र से होकर गुजरती है, जो इसकी जलवायु और वनस्पतियों को प्रभावित करती है।पोड़ाहाट राज का ऐतिहासिक महत्व भी बहुत अधिक है, जो सिंहवंश राज के शासनकाल से जुड़ा हुआ है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत में विभिन्न त्योहार और परंपराएँ शामिल हैं।इसकी भौगोलिक दशा और दिशा जलवायु परिवर्तन और मानवजनित गतिविधियों से प्रभावित है। यहाँ की जैव विविधता, कृषि, और जल संसाधनों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है आज का पोड़ाहाट पश्चिमी सिंहभूम जिलों के चक्रधरपुर, बंदगाँव, सोनुआ, गोईलकेरा, गुदरी, मनोहरपुर और आनंदपुर नागरिक विकास खंड में फैला हुआ है। इस प्रभाग का कुल क्षेत्रफल 76401.65 हेक्टेयर है। 22'20' से 22'50' उत्तरी अक्षांश और 85'5' से 85'30' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। मुख्य पोड़ाहाट अभ्यारण्य कमोबेश एक सघन ब्लॉक का निर्माण करते हैं| कारो नदी पश्चिम से इसका पोषण करती है। यह उत्तर में खूंटी जिले, दक्षिण में दक्षिण पूर्व रेलवे की हावड़ा नागपुर लाइन , पूर्व में सरायकेला – खरसावाँ और आंशिक रूप से उड़ीसा से, पश्चिम में सिमडेगा और खूंटी से घिरा है। पोड़ाहाट का हिस्सा बनने वाले जंगलों को 1858 में संग्राम के बाद सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया। बाद में उन्हें भारतीय अधिनियम की धारा 38 के तहत अपने अधिकार में रखा। सघन वन की दृष्टि से भी सिंहभूम और ख़ास कर पश्चिमी सिंहभूम अपने आप में मिसाल है। यहाँ के पेड़ों की लकड़ी का मूल्य तो कल्पना से बाहर है। इसलिए यह क्षेत्र विकास की कुल्हाड़ियों की मार भी सबसे अधिक झेल रहा है। अगर वनों को बचाने के लिए अभी से विशेष प्रयास नहीं किये गये तो देश में सघन वन का यह इलाका सिर्फ याद और इतिहास में नमूना बनकर रह जाएगा। इस शोध के परिणामस्वरूप, पोड़ाहाट राज की भौगोलिक दशा और दिशा के आधार पर जलवायु परिवर्तन, मानवजनित गतिविधियों, जैव विविधता, कृषि, जल संसाधन आदि के पूर्व के क्रियाकलापों के साथ वर्तमान स्थिति को सुधारने के सुझाव दिए गए हैं।

बीज शब्द *–पोड़ाहाट, जलवायु परिवर्तन ,मानवजनित गतिविधियाँ, जैव विविधता, कृषि, जल संसाधन*

प्रस्तावना

झारखंड वर्ष 2000 में बिहार से अलग हुआ था। यहाँ की अधिकांश आबादी अपनी अर्थव्यवस्था के लिए कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों पर निर्भर है। झारखंड की 80% आबादी कृषि में लगी हुई है। झारखंड में खनिज संसाधनों की प्रचुरता है और यह अभ्रक, कोयला आदि के उत्पादन में पहले स्थान पर है। खनन और भारी उद्योगों पर झारखंड की निर्भरता इसे ग्रीनहाउस गैसों का एक बड़ा उत्सर्जक बनाती है। ग्रीनहाउस गैसें, विशेष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड, इन भारी उद्योगों से निकलने वाली गैसें तापमान वृद्धि के लिए एक दुर्लभ प्रतिक्रिया हैं। खनन उद्योग वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। झारखंड, दुनिया के कई क्षेत्रों की तरह, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अनुभव करता है। वर्षा, तापमान और प्रतिकूल मौसम की स्थिति में परिवर्तन राज्य में विभिन्न पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक परिणामों में योगदान करते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, झारखंड के 14 जिले जलवायु परिवर्तन के लिए गंभीर रूप से संवेदनशील हैं। जलवायु परिवर्तन से प्रभावित जिले गढ़वा, पलामू, चतरा, हजारीबाग, गिरिडीह, बोकारो, गोड्डा, साहेबगंज, पाकुड़ और खूंटी हैं। आईसीएआर के शोध की रिपोर्ट के अनुसार, झारखंड के

छह जिले कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के प्रति संवेदनशील हैं। आईसीएआर ने झारखंड के 18 ग्रामीण जिलों का विश्लेषण किया, जिनमें से छह जिले - गढ़वा, गोड्डा, गुमला, पाकुड़, साहेबगंज और पश्चिमी सिंहभूम को उच्च जोखिम वाले जिलों की श्रेणी में रखा गया है।इन जिलों में प्रमुख सिंह वंश की राजधानी पोड़ाहाट पश्चिमी सिंहभूम के जलवायु परिवर्तन का अध्ययन किया गया|

शोध विधि एवं आंकड़ों का संग्रहण

अध्ययन के लिए चुनी गई पद्धति प्राथमिक और द्वितीयक डेटा पर आधारित ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति है। प्राथमिक डेटा सरकार की रिपोर्ट, घोषणा, एजेंडा, नीतियों आदि जैसे प्राथमिक स्रोतों से एकत्र किया गया है। द्वितीयक डेटा पत्रिकाओं, पुस्तकों, वेबसाइटों, लेखों और टिप्पणियों और पुस्तकालयों से एकत्र किया गया साथ ही गुणात्मक विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न जानकारी और डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया ।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं-

1. झारखण्ड के भौगोलिक एवं जलवायु की स्थिति पर प्रकाश डालना ।
2. सिंह वंशों की राजधानी पोड़ाहाट की भौगोलिक दशा एवं दिशा का अध्ययन।
3. आज के सिंहभूम की स्थिति पर प्रकाश डालना।

पोड़ाहाट अभ्यारण्य, जिसमे सोनगरा, कुन्द्रूगुटु और बेरा ब्लॉक के जंगल शामिल है| वन विभाग द्वारा सीधे प्रबंधित किये जाने वाले पहले अभ्यारण्यों में से एक है। यह पथ सम्पूर्ण रूप से पहाड़ी है, लेकिन ढलान के साथ सीमा का विस्तार करता है। कुल मिलाकर यह पथ कई पहाड़ियों और खड़ी घाटियों से बना है । यह पथ छोटानागपुर पठार के दक्षिण पूर्वी किनारे पर स्थित है। भूमि की ऊँचाई उत्तर से दक्षिण की ओर घटती जाती है| इसलिए भूमि का सामान्य ढलान दक्षिण की ओर है। भौगोलिक दृष्टि से पूरा क्षेत्र पहाड़ी , ढलानदार और अत्यधिक उबड़-खाबड़ (बीहड़) है।

जलवायु- झारखण्ड में आम तौर पर तीन उष्णकटिबंधीय मौसम होते हैं| ग्रीष्म ऋतु मार्च के मध्य से लगभग जून के मध्य तक शुरू होती है| वर्षा ऋतु आम तौर पर जून के अंत तक शुरू होती है,और लगभग मध्य अक्तूबर तक जारी रहती है। मानसून आम तौर पर जून के अंत में आता है। पूरा क्षेत्र कृषि पर निर्भर करता है| सर्दी का मौसम आम तौर पर अक्तूबर के मध्य से शुरू होकर फरवरी माह के आखिरी तक चलता है। दिसंबर से जनवरी तक पुरे क्षेत्र में कोहरा देखने को मिलता है। पोड़ाहाट छोटानागपुर पठार के दक्षिणी किनारे पर होने के कारण इस क्षेत्र में दक्षिण–पश्चिम मानसून (जून-सितम्बर) की बारिश होती है। इस पथ की प्रमुख नदियाँ कोयल, कारो और संजय है। इस संभाग में कई पर्यटन स्थल भी है। यह एक उच्च भूमि क्षेत्र है, जिसकी समुद्र ताल से ऊँचाई चाईबासा के पड़ोस में 750 फीट से लेकर दक्षिण में 1000 फीट तक है। उत्तर और उत्तर पूर्व में जिसमे असंतालिया , अजोधिया, चैनपुर सिदिऊ, लोटा,राजाबासा, चिरु और चराई पीर साथ ही गुमला पीर का भाग शामिल है। इसका अधिकांश हिस्सा खुला और हवादार साथ ही ढलानदार है। इसमें कई समृद्ध गाँव थे| अच्छी खेती होती थी।

1906 तक पश्चिम, दक्षिण और पूर्व में गंगपुर, बोनाई और क्योंझर राज्यों से घिरा हुआ, व्यावहारिक रूप से निर्जन है और लगभग शुद्ध साल की एक अखंड चादर बनाता है, जो भारत में शायद ही कहीं और देखने को मिले। पोरहाट के आरक्षित वन सभी कोल्हान पीरों (गाँवों का समूह) में स्थित हैं, बेरा ब्लॉक के एक हिस्से को छोड़कर, जो पोड़ाहाट में स्थित है, और राज्य में संरक्षित वनों में वह सारी ज़मीन शामिल है जो न तो आरक्षित वन है और न ही खेती और आवास के लिए अधिगृहीत है। आरक्षित वनों में साल (शोरिया रोबस्ट ए) प्रमुख और अब तक का सबसे महत्वपूर्ण पेड़ है। गांवों में कुसुम, महुआ और आम जैसी अन्य प्रजातियों

के पेड़ अपने खाने योग्य और बिकने योग्य उत्पादों के कारण साल से अधिक मूल्यवान हैं, जैसे महुआ के फूल, महुआ और कुसुम के बीजों का तेल, कुसुम के पेड़ों पर उगने वाला लाख और आम, कटहल, इमली आदि के फल। हालांकि सबसे विशिष्ट पेड़ साल है। वास्तव में, अगर सिंहभूम जिले के आरक्षित जंगलों में साल के अलावा किसी अन्य प्रजाति का कोई पेड़ नहीं होता, तो भी वे भारत में सबसे मूल्यवान पेड़ों में से एक होते, और इसके बिना वे बहुत ही नगण्य राजस्व उत्पन्न करते। वाणिज्यिक पहलू से या किसान के व्यापक रूप से अलग दृष्टिकोण से देखा जाए, तो इसका महत्व अतुलनीय है। यह हर जगह प्रचुर मात्रा में उगता है - लगभग मिट्टी से रहित खड़ी और पथरीली ढलानों पर, ऊंचे पठारों पर और नम घाटियों में, बशर्ते कि मिट्टी हमेशा जलमग्न न हो हर साल गांवों की भूमि पर लगने वाली आग से कटी-फटी, और बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी इसकी झाड़ियों ने हाल ही में खेती के लिए लाए गए पहाड़ी ढलानों को ढक लिया है जबकि आरक्षित वनों के अधिक उपजाऊ क्षेत्र, जिन्हें पिछले दशक के दौरान कमोबेश सफलतापूर्वक आग से बचाया गया है, हर जगह विशाल पेड़ों के खंभों और पौधों की शानदार वृद्धि से ढके हुए हैं। चौड़ी घाटियों के तल में यह सबसे अच्छी तरह पाया जाता है, और ऐसे इलाकों में 10 फीट की परिधि और 100 फीट से अधिक ऊंचाई वाले पूरी तरह से स्वस्थ और अच्छी तरह से विकसित पेड़ कभी-कभी मिल जाते हैं।

सतह के क्रमिक स्तरों के बीच खेती ज्यादातर चावल की फसलों के साथ की जाती थी। यह हिस्सा संजय ,रोरो,और खरकई नदियों का था। इस राज का दक्षिणी भाग और औला पीर का दक्षिण-पश्चिम भाग शामिल है। देश के इस हिस्से की मिट्टी अन्य जगहों की तुलना में अधिक समृद्ध है| इसके अपवाह कांगिरा और बैतरणी नदियों द्वारा होता था, जो पोड़ाहाट और क्योंझर के बीच की सीमा का हिस्सा बनती थी। अपने आठ मिल के मार्ग तक बैतरणी नदी इसके बीच की सीमा थी। इसके तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण गाँव जयंतगढ़ के पश्चिम में लगभग 4 मिल की दुरी पर एक जलप्रपात है, जिसके नीचे एक गहरा कुंड है, जिसे राम तीर्थ कहा जता है| जो हिन्दुओं के बीच एक पवित्र स्थान है। किवंदती है,कि सीता को रावण से बचाने के लिए दक्षिण की ओर जाते समय श्री राम स्वयं नदी के तट पर रुके थे। दक्षिण पूर्वी भाग, जिसमे ओला और लालगढ़ पीर के पूर्वी हिस्से शामिल है। यह इलाका चट्टानी और जंगलों से ढका हुआ है। लालगढ़ के पूर्व और दक्षिण में पहाड़ी श्रंखलाओं का क्षेत्र व्याप्त है। राज्य का पूर्वी भाग जिसमें भरभरिया और थाई पीर शामिल थे, खुला और ढलानदार है| दक्षिण पीर के दक्षिण पश्चिम भाग में सिंहासन पहाड़ियों के नाम से जानी जाने वाली पहाड़ियों की एक श्रृंखला और भरभरिया लालगढ़ पीर के बीच पहाड़ियों की एक और श्रृंखला इन भागों को और महत्वपूर्ण बनती है। इसके पश्चिमी और दक्षिण पश्चिमी हिस्से जिसमे पुरे जामदा,रेंगरा,रेला,लतुआ या नटुआ और सारंडा पीर ,कुलडीहा, केनुआ, गोईलकेरा पीर के दक्षिणी हिस्से, बरकेला, गुमला पीर के पश्चिम हिस्से शामिल थे। सत-बन्तरी और कोटगढ़ पीर के उत्तरी भाग पहाड़ी इलाके है, जो घने जंगल से ढके हुए हैं। राज के सबसे महत्वपूर्ण पहाड़ी सारंडा पीर के बड़े हिस्से में आती है। जिसकी ऊँचाई 3500 फीट है। ये दक्षिण पूर्व दिशा में अजोधिया और चैनपुर पीर तक फैले हुए हैं।

आज यहाँ का पर्यावरण असंतुलन का शिकार है| जिस क्षेत्र ने जंगल की बुनियाद पर अपनी पहचान बनाई,स्वयं को विदेशियों के अधीन आने से रोकती रही, अपनी सभ्यता और संस्कृति को आकार दिया, उसी बुनियाद को विकास की भेंट चढ़ाने का सिलसिला शुरू हो चुका है। वैज्ञानिक आधार पर पर्यावरण संतुलन के लिए किसी क्षेत्र में कम से कम 33 प्रतिशत जंगल जरुरी माना गया है| आज की वर्त्तमान स्थिति विकास की प्रचलित अवधारणा पर गंभीर सवालिया निशान है। सिंहभूम (पोड़ाहाट) का सारंडा इलाका सघन वन के लिए चर्चित है। यहाँ 25-30 मीटर ऊँचे और 1-2 मीटर मोटाई वाले आकर्षक और विशालकाय पेड़ जहाँ –तहां आज भी मौजूद है| गुआ और किरीबुरू मुख्यत:खनन क्षेत्र है| यहाँ के जंगल वन्य प्राणियों और खासकर हाथियों के लिए मशहूर है यह जंगल करीब 131797.50 हेक्टेयर में फैला हुआ है| सारंडा जंगल का नोआमुंडी का इलाका खनन की वजह से क्षतिग्रस्त है| गोयलकेरा और चक्रधरपुर का इलाका भी वन विनाश का नजारा प्रस्तुत करता है। सिंहभूम उद्योग और खनन के हिसाब से सिर्फ झारखण्ड ही नहीं बल्कि पुरे देश में सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है। सघन वन की दृष्टि से भी सिंहभूम और ख़ास कर पश्चिमी सिंहभूम अपने आप में मिसाल है। यहाँ के पेड़ों की लकड़ी का मूल्य तो कल्पना से बहार है। जिले में सबसे अच्छे साल

वृक्ष के वन और सारंडा (सात सौ पहाड़ी)वन क्षेत्र दुनिया भर में जाना जाता है। परिदृश्य रूप में जलप्रपात एवं जंगली जानवर से भरे हुए जैसे – हाथी, जंगली भैंसा, बाघों, तेंदुए, भालू, जंगली कुत्तों, जंगली सूअरों, सांभर, हिरण और चित्तीदार हिरण भी पाए जाते थे। मनुष्यों के बसने से इनकी संख्या घटते क्रम में देखी जा सकती है । यह क्षेत्र विकास की कुल्हाड़ियों की मार भी सबसे अधिक झेल रहा है। अगर वनों को बचाने के लिए अभी से विशेष प्रयास नहीं किये गये तो देश में सघन वन का यह इलाका सिर्फ याद और इतिहास में नमूना बनकर रह जाएगा । दलमा और धालभूम के वनों का विनाश इस कदर हो चुका है की अब वहां अच्छे जंगल की कल्पना भी नहीं की जा सकती| इस क्षेत्र में वन विनाश का कारण सिर्फ खनन नहीं बल्कि औद्योगिकीकरण है। रेलवे की पटरियों को भी बिछाने में भी यहाँ के जंगल को विनाश झेलना पड़ा। यहाँ के जंगल में साल,टीक,अर्जुन,बीजा,करम,केन्दु,महुआ और बांस सहित पेड़ की कई दुर्लभ प्रजातियाँ पाई जाती है।

जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तन मानवीय गतिविधियों के कारण होता है जो पूरी दुनिया की समस्या है। जलवायु परिवर्तन ध्रुवीय बर्फ की चोटियों और ग्लेशियरों के पिघलने में योगदान देता है, जिससे जल स्तर बढ़ता है, जिससे तटीय समुदायों को खतरा होता है। तूफान, सूखा और जंगल की आग जैसी गंभीर मौसम स्थितियों की बढ़ती तीव्रता और आवृत्ति जलवायु परिवर्तन से जुड़ी हुई है, जिसका असर दुनिया भर के समुदायों पर पड़ रहा है। कम वर्षा से पानी की उपलब्धता और कृषि उत्पादकता में बदलाव आ सकता है, जिससे संभावित रूप से खाद्य असुरक्षा हो सकती है। झारखंड में ग्लोबल वार्मिंग का असर आसपास के इलाकों और समुदायों पर पड़ रहा है। कुछ खास प्रभावों में वर्षा में बदलाव शामिल है, जिससे कृषि के लिए पानी की उपलब्धता में बदलाव आ रहा है। अनियमित वर्षा के कारण सूखा या बाढ़ आ रही है, जिससे फसल की पैदावार और आजीविका प्रभावित हो रही है। झारखण्ड इस सूखे का दंश अपनी धान की खेती में कमी से झेल रहा है।झारखंड में वनों का एक बड़ा क्षेत्र है और जलवायु में परिवर्तन इन पारिस्थितिकी तंत्रों को नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे जैव विविधता और स्थानीय समुदायों के लिए वन संसाधनों की उपलब्धता प्रभावित हो रही है। झारखंड में पर्यावरणीय मुद्दों से निपटने के लिए सतत कृषि, जल प्रबंधन और वन संरक्षण आवश्यक हैं। इन चुनौतियों के खिलाफ सामुदायिक जागरूकता और अनुकूलन उपाय महत्वपूर्ण हैं।

पश्चिमी सिंहभूम में होने वाली पर्यावरणीय समस्याओं और सरकार द्वारा इन मुद्दों को कैसे संबोधित किया जाता है, इसकी बेहतर समझ के लिए यहाँ के जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करना आवश्यक है। यह ज्ञान प्रभावी नीतियों को तैयार करने, संसाधनों को आवंटित करने और जलवायु की गंभीरता को कम करने और समायोजित करने के लिए कार्य योजना को लागू करने, पर्यावरणीय खतरों के सामने सतत विकास और अनुकूलन सुनिश्चित करने में मदद करता है। इसके अलावा, झारखंड में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को समझना संभावित सामाजिक-आर्थिक नतीजों का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है, जैसे कि कृषि, जल संसाधन और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव। सरकार इस तथ्य का उपयोग अनुकूली उपाय, बुनियादी ढांचे के विकास और आपदा सम्बन्धी योजनाओं को तैयार करने के लिए कर सकती है। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन को संबोधित करना वैश्विक पर्यावरणीय लक्ष्यों के साथ संरेखित है, यह क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देता है और झारखंड को जलवायु परिवर्तन से निपटने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयास में एक जिम्मेदार भागीदार के रूप में स्थापित करता है। सिंहवंशों की भूमि में कई ऐसे स्थल हैं जो स्वयं में अनोखी और ऐतिहासिक महत्त्व की है। झारखण्ड सरकार इस ओर यदि सार्थक प्रयास करें तो हमारे सिंहभूम की इस विरासत को हम ऐतिहासिक धरोहर के रूप में आने वाली पीढ़ी को दे सकते है | सिंहभूम की धरती के इन मुख्य स्थलों की सूची इस प्रकार है-

बिद्री :- यह गाँव मंझारी प्रखंड में स्थित है। इसके बाहरी हिस्से में पहाड़ों से घिरा एक छोटा सा झील है। झील के पश्चिम में स्थित वन डाक बँगला मनोरम प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करता है। थकोरा झरना यहाँ से लगभग 6 किलोमीटर दूर है ।

चैनपुर :- यह गाँव चक्रधरपुर ब्लाक में स्थित है और इसके शिव मंदिर के लिए जाना जाता है। शिव चतुर्दशी और चैत्र संक्रांति (अप्रैल) के अवसर पर सालाना बड़े मेले आयोजित किये जाते हैं।

हिरनी जलप्रपात :- यह गाँव चाईबासा से 40 किलोमीटर दूर स्थित है।राँची-चाईबासा रोड पर चक्रधरपुर के उत्तर में है| इसमें घने जंगलों के बीच एक खुबसूरत झरना होता है| यह लोकप्रिय पिकनिक स्थान है।

जगन्नाथपुर –गाँव का नाम इसके तत्कालीन शासक ,पोड़ाहाट के राजा जगन्नाथ सिंह पर है। इसमें महादेव का एक प्राचीन मंदिर है

केरा:- यह चक्रधरपुर में ब्लाक मुख्यालय के उत्तर –पूर्व में स्थित है| यह चैत्र –संक्रांति के अवसर पर आयोजित वार्षिक 10 दिवसीय मेले के लिए जाना जाता है। गाँव में माँ भगवती केरा देवी का मुख्य मंदिर है,जो लाखों की संख्या में भक्तों को आकर्षित करती है।यह मंदिर ब्राह्मणी नदी किनारे स्थित है।राज्य सरकार के पर्यटन विभाग के निर्देश पर इस मेले को राजकीय मेला घोषित किया जा चुका है।

कोटगढ़:- यह गाँव जगन्नाथपुर ब्लॉक में स्थित है । स्थानीय मतों के अनुसार, यह बहुत शक्तिशाली भारतीय शासक सिंह वंश के अधीन था। जिनके प्रभाव जगन्नाथपुर,मंजरी और चक्रधरपुर के क्षेत्रों में फैल गए थे। राजा अर्जुन सिंह के पुत्र नरपत सिंह ने कोटगढ़ ,जगन्नाथपुर और जन्तिगढ़ में किले बनवाये, जो राजवंश के अंतिम राजा थे।

लुपुन्गुटू :- यह केवल चाईबासा से 2 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गाँव है।यह अपने शोध से सम्बंधित पुस्तकालय एवं लोकप्रिय वन भोज के लिए प्रसिद्ध है ।

महादेव साल:- यह स्थान पश्चिमी सिंहभूम से लगभग 5 किलोमीटर दूर स्थित है। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ प्रतिवर्ष बड़ा मेला लगता है|

रामतीर्थ :- यह गाँव जगन्नाथपुर ब्लॉक में स्थित है, मकर संक्रांति पर आयोजित वार्षिक मेले के लिए जाना जाता है| इसमें एक शिव मंदिर और वैतरणी नदी है। स्थानीय परम्परा के मुताबिक़ भगवान् राम चंद्र ने मकर संक्रांति के दिन इस नदी को पार किया, तब से मेले का आयोजन किया जा रहा है।

थोल्कोबाद :-यह गाँव पश्चिमी सिंहभूम से 46 किलोमीटर दूर है| मनोहरपुर में ब्लॉक मुख्यालय के दक्षिण में है। यह समुद्र टल से 1800 फीट की ऊँचाई पर घने जंगलों के बीच स्थित है,विशेष रूप से आगंतुकों को अपनी ओर खींचता है। सबसे पुराना साल का पेड़ ”सारंडा क्वीन” यहाँ मौजूद है।

बेनीसागर:यह पश्चिमी सिंहभूम और उड़ीसा की सीमा में स्थित है| इस जगह का नाम राजा बेनी के नाम पर रखा गया था| बेनीसागर तालाब के चारो ओर खिले कमल के फूल इसकी शोभा बढ़ाते हैं। स्थानीयों की माने तो तालाब के अंदर एक चांदी से बना मंदिर मौजूद है| इस तालाब के कभी ना सूखने की अद्भुत विशेषता इस स्थान के रहस्यों को शोधकर्ताओं के अलावा पर्यटकों के मन में भी कई सवाल उत्पन्न करती है।

इन स्थलों के वनों, नदियों एवं तालाबों के संरक्षण से हम सिंहभूम (सिंहवंश) की विरासत को संजोये रख सकते हैं| वन कई तरह की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ (ES) प्रदान करते हैं, जिनमें लकड़ी, जल उत्पादन, कार्बन पृथक्करण, मृदा संरक्षण और जैव विविधता शामिल हैं, और मानव कल्याण के लिए इनका महत्व लगातार बढ़ रहा है। भविष्य की वन प्रबंधन रणनीतियों को संरचना और विन्यास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। झारखंड में 33% से ज़्यादा हरियाली होने के बावजूद, यहाँ जलवायु परिवर्तन के असर दिखने लगे हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए कृषि पद्धतियाँ, वनरोपण और पानी का कुशल प्रबंधन महत्वपूर्ण हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए झारखंड में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल परिणामों को कम करने के लिए ऊर्जा कुशल उपकरणों और नई तकनीकों का उपयोग,अपशिष्ट प्रबंधन और रिसाइक्लिंग की प्रथाओं को अपनाना चाहिये। स्थानीय और अनुकूलित खाद्य प्रणालियों को अपनाना, जल संचयन और वर्षा जल संचय की तकनीकों का अनुसरण करना,वृक्षारोपण एवं वनीकरण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना। स्थानीय समुदायों की भागीदारी ,जलवायु शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, सम्बंधित अनुसंधान और विकास की आवश्यकता है ताकि नए और प्रभावी समाधान विकसित किये जा सके। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निगमों को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। पश्चिमी सिंहभूम प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध जिला है। जनसंख्या में वृद्धि और जल ग्रहण क्षेत्रों पर इसके प्रभाव के कारण नदियों के सूखने का

ख़तरा है| यहाँ जल निकायों के पुनरुद्धार के लिए सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुसार जिला प्रशासन द्वारा विभिन्न परियोजनाएं शुरू की जा रही है| ग्रामीण क्षेत्रों के लोग एकत्रित होकर अपनी दैनिक जल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तालाबों का निर्माण कर रहे हैं, जिन्हें डाभ के नाम से जाना जाता है। सरकार भी जल पुनर्जीवन संरचनाओं का निर्माण कर रही है।

निष्कर्ष

केन्द्रीय अस्पताल, बड़ा जामदा की छत पर वायु प्रदुषण मापक स्टेशन स्थापित किया गया है। इसे प्रति घंटे अद्यतन किया जाता है।जिले में वायु प्रदुषण के प्रमुख स्रोतों में से एक ए सी सी सीमेंट और अन्य प्रमुख कम्पनियां है। इस स्तर को कम करने के लिए प्रस्तावित प्रबंधन योजना–घरों में आधुनिक इंधन के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाय। घरेलु उत्सर्जन को कम करने के लिए पारंपरिक ईंधन (कोयला, लकड़ी आदि) के बजाय एल पी जी, इंडक्शन कुकर, सौर कुकर जैसे आधुनिक ईंधन का उपयोग किया जाना चाहिए। उद्योगों से निकलने वाले उत्सर्जन का उपचार-उद्योगों से निकलने वाले उत्सर्जन को वायुमंडल में छोड़े जाने से पहले सरकारी मानदंडों के अनुसार उपचारित किया जाना चाहिए। वृक्षारोपण के द्वारा भी सीधे तौर पर आस-पास की हवा की गुणवत्ता को प्रभावित किया जा सकता है| इस शोध के बाद, भविष्य में झारखंड की विशिष्ट नीतियों और अनुकूली उपायों के कार्यान्वयन और मूल्यांकन के साथ आगे बढ़ा जा सकता है। समय बीतने के साथ ही, लचीलापन बढ़ाने के लिए नवीन तकनीकों, समुदाय आधारित पहल और नीति निर्माण का उपयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक हितधारकों, पर्यावरण वैज्ञानिकों और स्थानीय स्तर की पहल के साथ बहु-विषयक सहयोग जलवायु परिदृश्य और शमन उपायों को विकसित करने की समग्र समझ में योगदान देगा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

जे.ए. क्रेवेन, बंदोबस्त पदाधिकारी, उपयुक्त सिंहभूम, दिनांक 15-06-1897, पैरा-2 रेव विभाग,नवं-1898 फ़ाइल् नं 16.2 (वेस्ट बंगाल स्टेट आर्काइव) फौरेस्ट. झरखंड.गव.इन/ही/नोड/14429, जे.ए.क्रेवेन, बंदोबस्त पदाधिकारी, उपयुक्त सिंहभूम, दिनांक 15-06-1897 ,पैरा-2

रेव.विभाग, नवं-1898 फ़ाइल् नं 16.2 (वेस्ट बंगाल स्टेट आर्काइव) ,सर्वे एंड सेटलमेंट ऑपेरशन इन द पोड़ाहाट इस्टेट 1900-1903, बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस प- 3

कोल्हान अंडर द ब्रिटिश रुल, एम साहू, द न्यू डायमंड प्रेस ,कलकत्ता-12

पी.सी.राय चौधरी, सिंहभूम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,पटना 1958,पृ. 52,63

सी.के.पैटी,हिस्ट्री ऑफ़ सरायकेला एंड खरसावाँ स्टेट(1620-1956) पृ- 7

.एल.एस.एस.ओ मैली.जे.हाल्टन ,बिहार द हार्ट ऑफ़ इंडिया,1949, बॉमबे

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण बेनीसागर, राँची,झारखण्ड|

एन.कुमार, राँची डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ,पटना 1970 पृ. 508

टी. एन.एन.सिंहदेव, सिंहभूम, सरायकेला एंड खरसावाँ थ्रू थे एजेस कलकत्ता, 1954

एल एस एस ओमेली –सिंहभूम,सराइकेला एंड खरसावा ,कलकत्ता, द बंगाल सेक्रेटेरियट बुक डिपो.1910,पृ- 23

/एच टी टी पी एस//चाईबासा. नीक. इन/ही/